Pushpa Chauhan
Professor Deptt of Economics
Vaishali Mahila College, Hajipur

सार्वजनिक व्यय

सार्वजनिक व्यय क्या है? सार्वजनिक व्यय में होने वाली वृद्धि के कारणों की व्याख्या करें।

लोक वित्त के अन्तर्गत सार्वजनिक सत्ताओ यानी सरकार के आय एवं व्यय का अध्ययन करते है। लोक वित्त में सार्वजनिक व्यय का उतना ही महत्व है जितना उपभोग का अर्थशास्त्र में है।

सार्वजनिक व्यय से अभिप्राय उन सब खर्चों से है जिन्हें किसी देश की केन्द्रीय, राज्य तथा स्थानीय सरकारे अपने प्रशासन, सामाजिक कल्याण एवं आर्थिक विकास के लिए करती है। केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय सरकारों जैसे सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा किए गए व्यय को लोगो के सामाजिक आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए सार्वजनिक व्यय के रूप में जाना जाता है।

सार्वजनिक व्यय अर्थव्यवस्था के वित्तीय प्रवाहो को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनो प्रकार से प्रभावित करता है जिससे मांग एवं पूर्ति के ढाँचे में परिवर्तन आता है। सरकार विभिन्न आर्थिक नीतियों को प्रभावशाली ढंग से लागू करने के लिए एक सक्षम यंत्र के रूप में सार्वजनिक व्यय का प्रयोग करती है। इन आर्थिक नीतियों में रोजगार के स्तर को अधिकतम करना, मूल्य में स्थिरता, आर्थिक स्थायित्व की प्राप्ति, आदि सम्मिलित है।

इस प्रकार शासन के संचालन के साथ साथ समाज एवं समुदाय की आवश्यकता को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा किए जाने वाले व्यय को ही लोक व्यय या सार्वजनिक व्यय कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

18वी 19वी शदी मे सार्वजनिक व्यय को फिजूल या अनुत्पादक माना जाता था। 19 वी शदी में सार्वजनिक व्यय का आकार छोटा था क्योंकि उस समय राज्य का कार्य पुलिस राज्य (Police State) तक सीमित था। राज्य का मुख्य उद्देश्य आन्तरिक कानून व्यवस्था को कायम रखना, बाह्य आक्रमणों से देश को सुरक्षित रखना तथा शासन संचालन तक सीमित था। आर्थिक गतिविधियों में राज्य की कोई रुचि नहीं थी।

20 वी शदी के तीसरे राज्य का कल्याणकारी राज्य (Welfare State) का रूप ग्रहण कर चुका है। एक कल्याणकारी राज्य राजनीति के साथ साथ आर्थिक एवं सामाजिक गतिविधियों में भी संलग्न होती है। 20 वी शदी के दूसरे दशक में समाजवाद का उदय हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान तथा इसके बाद अनेक नव स्वतंत्र राज्य का उदय हुआ जिससे इन राज्यों में तीव्र आर्थिक विकास की आवश्यकता के कारण सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई।

20 वी शदी में ही जान मेनार्ड केन्स ने अर्थव्यवस्था में आय एवं विकास के स्तर को निर्धारित करने के लिए सार्वजनिक व्यय की भूमिका पर प्रकाश डाला था।

इस प्रकार आधुनिक समय में राज्यों का कार्य इतना विस्तृत हो गया है कि उन्हें कुल राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा भाग सार्वजनिक कार्यों पर व्यय करना पड़ता है।

अल्पविकसित देशों में तो सरकार को निर्माण एवं विकास कार्य के लिए बहुत अधिक व्यय करना पड़ता है साथ ही अपनी जनता के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर भी व्यय करना पड़ता है।

इसी प्रकार उन्नत देशों में भी सरकारें सामाजिक हित के कार्यों को अधिक कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए अपने व्यय को

Scanned with CamScanner

की चुस्त - दुरुस्त रखना राज्य की जिम्मेवारी होती है जिसपर आधुनिक राज्यों को अपार धन राशि व्यय करनी पड़ती है।

(ii) जनसंख्या वृद्धि एवं शहरीकरण — 20 वीं शताब्दी में तीव्र गति से होने वाली जनसंख्या वृद्धि तथा शहरीकरण की प्रवृत्ति ने भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि को जन्म दिया है। जनसंख्या वृद्धि के कारण सड़क, बिजली, पेयजल, सिंचाई, जनस्वास्थ्य आदि पर किए जाने वाले खर्च को बढ़ा दिया है। शहरी जनसंख्या में वृद्धि से सार्वजनिक कोष पर अतिरिक्त भार भी पड़ता है क्योंकि शहरों में जल - निकासी, पेयजल की व्यवस्था, प्रदूषण नियंत्रण, सुरक्षा व्यवस्था, यातायात व्यवस्था एवं सुरक्षा, जन वितरण प्रणाली, कुड़े की सफाई व्यवस्था आदि पर अतिरिक्त सार्वजनिक व्यय करने की आवश्यकता होती है जिससे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

बढ़ती चली जाती है। अतः वर्तमान युग में सार्वजनिक व्यय का महत्व बहुत ज्यादा हो गया है क्योंकि आर्थिक क्रियाओं में राज्य का बढ़ता हुआ भाग तथा सार्वजनिक व्यय उत्पादन, वितरण और आर्थिक क्रियाओं के सामान्य स्तर को प्रभावित करता है।

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण

आधुनिक राज्यों के कार्यों में वृद्धि के कारण ही सार्वजनिक व्यय की मात्रा में वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में गहन एवं विस्तृत दृष्टिकोण से राज्य के कार्यों में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

गहन वृद्धि का अर्थ है कि राज्य के इन कार्यों पर जो राज्य द्वारा प्राचीन समय में भी किए जाते थे जैसे - प्रतिरक्षा तथा कानून व्यवस्था। आज इनपर भी पहले की अपेक्षा कई गुना अधिक व्यय किया जाता है।

विस्तृत वृद्धि का अर्थ है कि सरकार द्वारा आर्थिक विषयों में हस्तक्षेप बढ़ गया है और नए नए व्यवसाय एवं औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, वितरण की विषमता कम करना, मूल्य नियन्त्रण इत्यादि। इसके अतिरिक्त बहुत से सामाजिक एवं राजनीतिक कारणों से भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है।

इस प्रकार आधुनिक समय में सार्वजनिक व्यय में अनवरत वृद्धि हुई है इसके निम्न कारण है

1. आन्तरिक सुरक्षा - प्रत्येक राज्य का मुख्य दायित्व देश के अन्दर शान्ति व्यवस्था कायम करना है।

एडोल्फ वैगनर के अनुसार - सार्वजनिक व्यय में वृद्धि का एक प्रमुख कारण देश में आन्तरिक सुरक्षा व्यवस्था को कायम रखना भी रहा है। कानून व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कानूनी, प्रशासनिक तथा पुलिस व्यवस्था